डेली कॉलेज, जूनियर स्कूल

हिंदी सामूहिक कविता पाठ – 2018-19

कक्षा V D

एक बूँद (कविता)

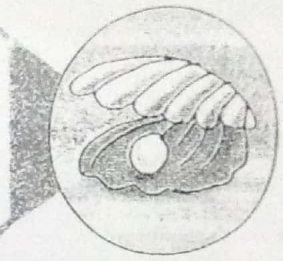

परिश्रम और संघर्ष के बल पर मनुष्य अपने भाग्य को सरलता से बदल सकता है। प्रस्तुत कविता में कवि एक बूँद के माध्यम से यही सत्य स्पष्ट करता है। कविता पढ़िए और जानिए, कैसे....

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।।

दैव! मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में?
या जलूँगी गिर अंगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।।

बह गई उस काल एक ऐसी हवा,
वह समुंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा पड़ी, मोती बनी।।

लोग यों ही हैं झिझकते, सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर को छोड़ना अकसर उन्हें,
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।।

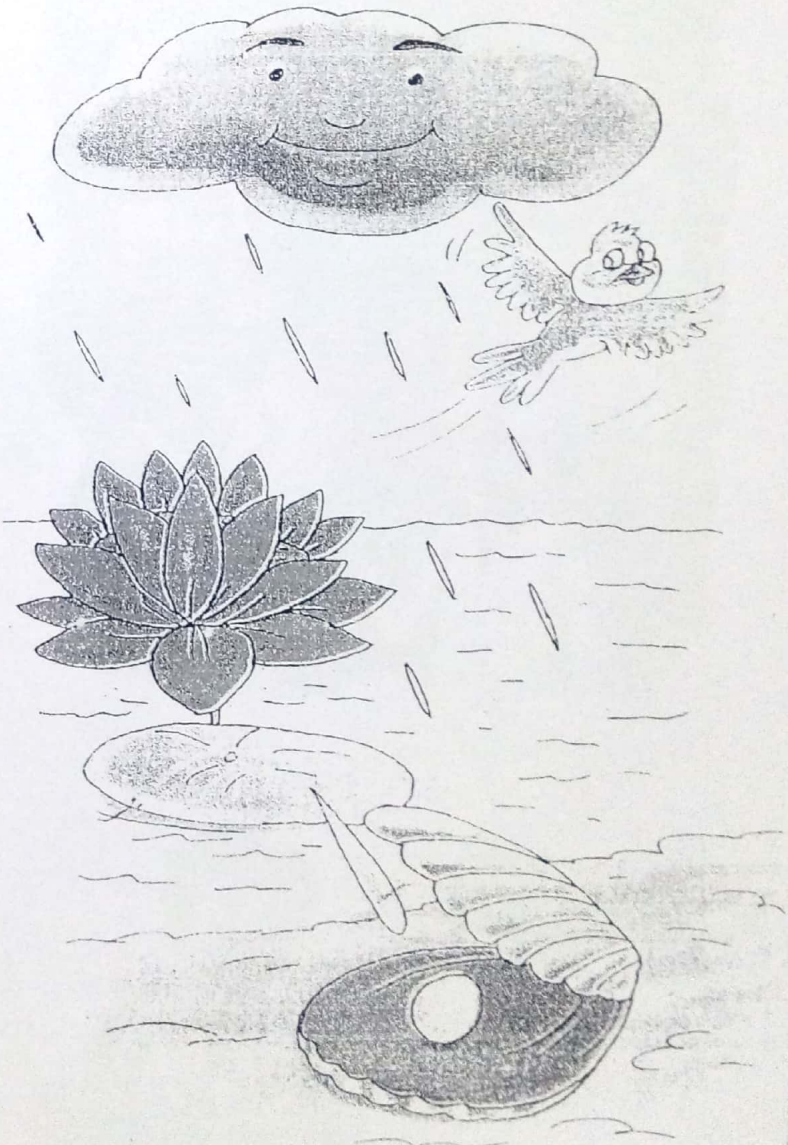

मन से

जीवन में सफल होने के लिए सबसे अधिक आवश्यकता किसकी होती है?

धन ☐ परिश्रम ☐ लालच ☐

-अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध

Scanned by CamScanner